रिकार्ड– मुखड़ा देख ले..... ओमशांति प्रातःक्लास 23–5–67
यह बातें रोज बाप बच्चों को समझाते हैं कि सोने से पहले अपना पोतामेल अंदर में देख लो कि (किसको) दुःख तो नहीं दिया है और कितना समय बाप को याद किया है। मूल बात यह है। गीत भी यही कहता है कि अपने अंदर में देख लो कि हम कितने तमोप्रधान से सतोप्रधान बने हैं। सारे दिन में कितनी देरी याद किया अपने मीठे2 बाप को। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। आत्माओं को कहा जाता है कि बाप को याद करो। अब वापस जाना है। कहां जाना है?शांतिधाम से होकर नई दुनियां में जाना है। यह तो पुरानी दुनियां है ना। जब बाप आवे तब स्वर्ग के द्वारा खुले। अब तुम बच्चे जानते हो कि हम संगमयुग पर बैठे हैं। यह भी वंडर है जो संगमयुग पर स्टीम्बर में बैठकर फिर उतर जाते हैं। अब तुम संगमयुग पर आकर पुरुषोत्तम बनने लिए आकर नैया पर बैठे हो पार जाने के लिए। फिर पुरानी कलियुगी दुनियां से दिल हटा लेनी होती है। इस शरीर द्वारा सिर्फ पार्ट बजाना है। अब हमको वापस जाना है बड़ी खुशी से। मनुष्य मुक्ति के लिए कितना माथा मारते हैं ;परंतु मुक्ति जीवनमुक्ति का अर्थ समझते ही नहीं हैं। शास्त्रों के अक्षर सिर्फ सुने हुये हैं ;परंतु वो क्या चीज है ,कौन देते हैं ,कब देते हैं यह कुछ भी पता नहीं है। तुम बच्चे जानते हो कि बाप आते ही हैं मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा देने। सो भी कोई एक बार थोड़े ही। बेअंत बार तुम मुक्ति जीवनमुक्ति फिर जीवनबंध में आते हो। दुनियां इन बातों को नहीं जानती है। इसलिए ही कहा जाता है बंदर से भी बदतर। मनुष्य होकर जिनको याद करते हैं परमपिता परमात्मा, तो उनको जानना भी चाहिए ना। अब यह बूझ पड़ी है कि हम आत्मा हैं। बाबा हर बच्चों को शिक्षा बहुत सहज देते हैं। तुम भक्तिमार्ग में दुःख में याद करते थे ;परंतु पहचानते नहीं थे। अब मैंने तुम्हें अपनी पहचान दी है कि कैसे मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। अभी तक कितने विकर्म विनाश हुये हैं वो अपना पोतामेल रखने से पता पड़ेगा। जो सर्विस में ही लगे रहते हैं उनको मालूम पड़ता है। बच्चों को सर्विस का शौक है। आपस में मिलकर सभी निकलते हैं। मनुष्यों का जीवन हीरे जैसा बनाने। यह कितने पुण्य का कार्य है। इसमें खर्चे आदि की भी कोई बात नहीं है। सिर्फ हीरे जैसा बनने लिए बाप को याद करना है। पुखराज परी, सब्ज परी यह सब जो नाम हैं वो तुम हो। जितना2 याद में रहेंगे उतना हीरे जैसा बनते जावेंगे। कोई माणिक जैसा बनेंगे,कोई पुखराज जैसा बनेंगे। नवरतन होते हैं ना। कोई ग्रहचारी होती है तो नवरतन पहनते हैं। ग्रहचारी में बहुत टोटके देते हैं। यहां तो सब धर्मवालों के लिए एक ही टोटका है मनमनाभव ;क्योंकि गॉड इज (वन)। मनुष्य से देवता बनने की वा मुक्ति जीवनमुक्ति को पाने की तदबीर भी एक ही है। सिर्फ बाप को याद करना है। तकलीफ की कोई बात नहीं। सोचना चाहिए कि मेरी याद क्यों नहीं ठहरती है?सारे दिन में मैंने इतना कम क्यों याद किया?जबकि इसी याद से हम एवर प्योर निरोगी बनेंगे। तो क्यों नहीं अपना चार्ट रखकर उन्नति को पावें?बहुत हैं जो दो/पांच रोज चार्ट रखकर फिर भूल जाते हैं। कोई को भी यह समझाना बहुत सहज होता है कि नई दुनियां को सतयुग ,पुरानी दुनियां को कलियुग कहा जाता है। कलियुग बदली होकर फिर जरूर सतयुग ही होगा। बदली होता है तभी हम समझा रहे हैं। शास्त्रों में तो कल्प की आयु ही लम्बी कर दी है। इसलिए सभी (घोर) अंधेरे में हैं। दूसरी बात कि बाप के लिए भी कह देते हैं कि अभी पूरा निश्चय नहीं होता है कि यह वो ही है जो ब्रह्मा तन में आकर पढ़ा रहे हैं। अरे, तुम ब्राह्मण हो ना। ब्र.कु.कु. कहलाते हो। इसका अर्थ ही फिर क्या है?वर्सा कहां मिलेगा?एडॉप्टेशन तब होती है जब कि कोई प्राप्ति होती है। तुम ब्रह्मा के बच्चे ब्रह्मा कुमार कुमारी बने हो। सचमुच बने हो वा इसमें भी कोई संशय है?शिवबाबा से वर्सा लेने लिए उनका बने हो ना ;परंतु इसमें भी कोई को संशय हो जाता है। पक्के निश्चय बुद्धि नहीं हैं। स्त्री और पुरुष की दृष्टि बदलने में भी समय लगता है। कोई बहुत महान भाग्यशाली होते हैं तो झट समझ जाते हैं। हम भी स्टुडेंट ,यह भी स्टुडेंट। तो भाई–बहन हो गये ना। .....

जब अपने आप को स्टुडेंट समझे। आत्मायें तो सब भाई2 हैं। फिर ब्र.कु.कु. बनने पर भाई–बहन हो जाते हैं। यह बड़ा वंडर है और खुशी भी होती है मनुष्य से देवता बनने की। यह कोई भी जानते नहीं हैं कि मनुष्य से देवता कैसे बनना होता है। तुम्हारे में से भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हैं। कोई तो बंधनमुक्त भी हैं तो भी कुछ ना कुछ बुद्धि जाती है। कर्मातीत अवस्था होने में टाइम लगता (है)। तुम बच्चों को अंदर में बहुत खुशी रहनी चाहिए। कोई भी मूंझ झंझट नहीं। हम आत्माओं को अब बाबा के पास जाना है। पुराने शरीर आदि सब छोड़कर। हमने कितना पार्ट बजाया है। अब चक्र पूरा होता है। ऐसे2 अपने साथ बातें करनी होती हैं। जितना बातें करेंगे उतना हर्षित भर(मुख) रहेंगे और अपनी चलन को भी देखते रहेंगे। कहां तक हम ल.ना. को वरने लायक बने हैं। नारद तो भक्त था ना। जब तक भक्ति की बदबू ना निकले तब तक कर्मातीत अवस्था हो नहीं सकती है। बुद्धि में स्वदर्शन चक्र फिरता रहे। बुद्धि से ही समझा जाता है अभीतो थोड़े ही समय में यह पुराना शरीर छोड़ना है। यह बहुत जन्मों के अंत के जन्म की भी अंत है। मृत्युलोक में यह (सबका) अंतिम शरीर है। तुम एक्टर्स भी हो ना। अपने को एक्टर समझते हो। आगे नहीं समझते थे। अभी यह नालेज मिली है। तो अंदर में खुशी बहुत रहनी चाहिए। पुरानी दुनियां से वैराग ,नफरत आनी चाहिए। तुम बेहद के सन्यासी.....हो। इस पुराने शरीर का भी बुद्धि से सन्यास करना है। घर–बार छोड़ भागना नहीं है। आत्मा समझती है इससे बुद्धि नहीं लगानी है। बुद्धि से इस पुरानी दुनियां ,पुराने शरीर का सन्यास किया है। अभी हम आत्मायें जाती हैं। जाकर बाप से मिलेंगी। सो भी तब होगा जब एक बाप को ही याद करेंगे। और कोई को याद किया तो स्मृति जरूर आयेगी। फिर सजा भी खानी होगी और पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। अच्छे2 विद्यार्थी जो होते हैं वो अपने साथ प्रण करते हैं हम स्कालरशिप लेकर ही छोड़ेंगे। एक2 स्कूल से दो/चार ऐसे निकलेंगे। तो यहां पर भी हर एक को यही खयाल में रखना है कि हम बाप से पूरा राजभाग लेकर ही छोड़ेंगे। उनकी फिर चलनी भी वैसी ही रहेगी। आगे चलकर (पुरुषार्थ) करते2 गैलप करना है। वो तब होगा जब रोज शाम को अपनी2 अवस्था को देखेंगे। बाबा के पास समाचार तो आते ही हैं हर एक के। बाबा हर एक को समझ सकते हैं। किसी को तो कह भी देते हैं कि तुम्हारे में तेा इतना दम नहीं दिखाई पड़ता है। यह ल.ना. बनने जैसी शक्ल दिखलाई नहीं पड़ती है। चलन, खान–पान आदि तो देखो। सर्विस ही कहां करते हो?फिर क्या बनोगे?फिर दिल में समझते हैं कि हम कुछ करके दिखावें। इसमें हर एक को इनडिपेंडेंट अपनी तकदीर उंच बनाने लिए पढ़ना है। अगर श्रीमत पर नहीं चले तो फिर इतना उंच पद नहीं पा सकेंगे। अभी पास नहीं हुये तो कल्प कल्पांतर नहीं होंगे। तुमको सब साक्षात्कार होंगे कि हम किस पद को पाने के लायक हैं। अपने पद का भी सा. करते रहेंगे। शुरू में भी सा. करते थे। फिर बाबा सुनाने लिए मना कर देते थे। पिछाड़ी में सब पता पड़ेगा कि हम क्या बनेंगे?फिर कुछ कर नहीं सकेंगे। कल्प कल्पांतर की यही हालत हो जावेगी। डबल सिरताज डबल राजभाग पा नहीं सकेंगे। अभी पुरुषार्थ करने की मार्जिन बहुत है। त्रेता के अंत तक 16108 की बड़ी माला बननी है। यहां पर तुम आये हो तो नर से नारायण बनने का पुरुषार्थ करना चाहिए। जब कम दर्जे का सा. होगा तो उस समय जैसे कि नफरत आने लगेगी। मुंह नीचे हो जावेगा हमने तो कुछ भी पुरुषार्थ नहीं किया है। बाप ने कितना समझाया कि चार्ट रखो ,यह करो ,वो करो इसलिए ही बाबा कहते थे जो भी बच्चे आते हैं सबकी फोटो रखो। भल (ग्रुप) का ही इकट्ठा हो। पार्टी ले आते हो ना। फिर उसमें तारीख ,नाम आदि सब लगा पड़ा हो। फिर बाबा बताते रहेंगे कि कौन गिरे?बाबा पास समाचार तो सब आते रहते हैं। बताते रहें कितनों को माया का खिंचाव हो गया। खतम हो गये। बच्चियां भी बहुत गिरती हैं। जैसे काम की भूतनाथिनी बन जाती है। एकदम डर्टी ब्रूट्स। ब्राह्मणी पंडा बनकर आती और फिर एकदम दुर्गति को पा लेती है बात मत पूछो। इसलिए ही बाप कहते

हैं मीठे2 बच्चों खबरदार रहो। माया कोई ना कोई रूप धरकर पकड़ लेती है। कोई के नाम–रूप तरफ देखो भी नहीं। भल इन आंखों से देखते हैं ;परंतु बुद्धि में एक बाप की याद रहे। तीसरा नेत्र मिला ही इसीलिए है कि बाप को देखो और याद करो। देहअभिमान को छोड़ते जाओ। ऐसे भी नहीं कि आंख नीचे कर कोई से बात करनी है। ऐसे कमजोर नहीं बनना है। देखते हुये बुद्धि का योग अपने बिलवेड माशूक की तरफ हो। इस दुनियां को देखते हुये अंदर में समझते हैं कि यह तो कब्रिस्तान बननी है। इससे क्या सम्बंध(रखेंगे)?तुमको ज्ञान मिलता है उसको धारण कर और उस पर चलना है। बाकी भक्ति मार्ग में तो सब हैं दंत कथायें। भक्तिमार्ग को कब ज्ञान मार्ग नहीं कहा जाता। कहीं भी कोई शास्त्रों की बात बोले तो (कहो) शास्त्रों का नाम नहीं लो। वो सब है भक्तिमार्ग। अभी है ज्ञान मार्ग। ज्ञान है तो फिर भक्ति की तो बांस भी नहीं रहनी चाहिए। सतयुग में भक्ति की बांस नहीं रहती है। भक्तिमार्ग का कोई भी शास्त्र आदि वहां पर नहीं होता है। संगमयुग पर तो यह सब कुछ भूलना पड़ता है। बाबा ने बहुत बार समझाया है कि यह शास्त्र आदि सब भक्तिमार्ग के हैं। ज्ञानमार्ग बिल्कुल अलग है। ज्ञान एक परमपिता परमात्मा पास ही है। बाकी सब है भक्ति। तभी तो पतित–पावन ज्ञान सागर को बुलाते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो कि ज्ञान से सदगति होती है। भक्ति से ड्रामा अनुसार दुर्गति ही होनी है। अब फिर बाप आये हैं सदगति करने तो फिर बाप को ही याद करना चाहिए। सारा दिन बाबा–बाबा करते रहना चाहिए। प्रदर्शनी पर समझाते समय हजार बार मुख से बाबा2 निकलते रहना चाहिए। बाबा को याद करने पर तुम्हारा कितना फायदा होगा। शिवबाबा कहते हैं कि मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। शिवबाबा को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। बाबा कहते हैं अब बस मुझे ही याद करो। यह भूलो मत। बाप का.....मिलता है मनमनाभव। ....पहले2 बाप को तो जानो। इसमें ही कल्याण है। यह 84 का चक्र तो समझाना बहुत आसान है। बच्चों को प्रदर्शनी में समझाने का शौक बहुत2 होना चाहिए। अगर कहीं देखें कि हम नहीं समझा सकते हैं तो कह सकते हैं कि हम अपनी बड़ी बहन को बुलाते हैं ;क्योंकि यह भी पाठशाला है ना। इसमें कोई कम कोई जास्ती पढ़ते हैं। इस कहने पर देहअहंकार नहीं आना चाहिए। जहां2 बड़ा सेंटर हो तो प्रदर्शनी कर देनी चाहिए। चित्र भी लगा हुआ हो गेट वे टू हैवेन वा स्वर्ग। अब स्वर्ग के (द्वार) खुल रहे हैं। इस होवनहार लड़ाई से पहले ही अपना वर्सा ले लो। जैसे मंदिर में रोजाना जाना होता है वैसे ही तुम्हारी भी यह पाठशाला है। चित्र लगा हुआ होगा तो समझाने में सहज होगा। कोशिश करो कि हम अपनी पाठशाला को चित्रशाला कैसे बनावें?भभका भी होगा तो मनुष्य आवेंगे। वैकुंठ जाने का रास्ता। एक सेकेंड में समझने का रास्ता। बाप कहते हैं कि तमोप्रधान तो कोई वैकुण्ठ में जा नहीं सकेंगे। नई दुनियां में जाने लिए सतोप्रधान बनना है। यह दुनियां ही तमोप्रधान है। भल बड़े2 शंकराचार्य आदि हैं। सबको बोलो यह भ्रष्टाचारी दुनियां है। विख से पैदा होने वाले हैं। और फिर उपर से बाप की ग्लानी कर और भी बोझा चढ़ाते हैं। सर्वव्यापी के ज्ञान से ही पापात्मा बनते हैं और सभी को बनाया है। पहले2 बाप का परिचय अच्छी रीति देना है। फिर माने ना माने। आगे चलकर मानेंगे। अभी नहीं मानते हैं। फिर बाद में रियलाइज करेंगे। सर्विस तो बहुत है ना। बनारस में बहुत आते हैं। फारेनर्स भी आते हैं। उनको भी समझाना है। बोलो गॉडफादर ही लिबरेटर है। कैसे लिबरेट करते हैं?तो चलो हम आपको समझावें। अब यह है ओल्ड वर्ल्ड। आयरन एज्ड तमोप्रधान है। इम्प्योर भी है। असली आत्मायें थी शांतिधाम स्वीटहोम में रहने वाली। वहां पर प्योर थीं, अब इम्प्योर हैं।फिर भी इसको प्योर जरूर बनना है। बाप कहते हैं कि मुझे याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बनकर पावन बन जावेंगे। ओम।